कार्यक्रम

अखण्ड शान्ति पाठ

अखण्ड शान्ति पाठ रविवार, दिनांक 20 सितम्बर प्रातः 12 बजे से प्रारम्भ होकर सोमवार, दिनांक 21 सितम्बर को दोपहर 1 बजे समाप्त होगा। इस शान्ति पाठ में ओउम् शान्ति का जाप जिव्हा से नहीं अपितु ह्रदय (ख्याल की जुबान) से किया जाता है। इससे साधकों को अनुपम आन्तरिक शान्ति और आनन्द का अनुभव होता है।

रविवार दिनांक 20 सितम्बर 2009

सायं 5.00 से 6.00 बजे तक	ध्यान व योगाभ्यास
सायं 6.00 से 7.00 बजे तक	प्रवचन व अभ्यास के सिद्धान्तों पर प्रकाश
सायं 7.00 से 8.00 बजे तक	प्रसाद वितरण व स्थानीय लोगों से चर्चा
रात्रि 8.00 से 10.00 बजे तक	भोग
रात्रि 10.00 से 11.00 बजे तक	टोली चर्चा

सोमवार दिनांक 21 सितम्बर 2009

प्रातः 6.30 से 8.30 बजे तक	प्रभात फेरी व ब्रह्मा मंदिर के दर्शन
प्रातः 10.00 से 11.00 बजे तक	ध्यान व योगाभ्यास
प्रातः 11.00 से 12.00 बजे तक	प्रवचन व अभ्यास के सिद्धान्तों पर प्रकाश
दोपहर 12.00 से 1.00 बजे तक	सामूहिक शान्ति पाठ
दोपहर 1.00 से 2.00 बजे तक	भोग

नोट :

1. परम पूज्य सुरेश भैया जी दिनांक 19 सितम्बर 2009, रात्रि 9.06 अहमदाबाद मेल द्वारा पुरानी दिल्ली से रवाना होकर दिनांक 20 सितम्बर 09, प्रातः 7.30 बजे अजमेर पहुँचेंगे। अजमेर से निजी वाहन द्वारा पुष्कर पहुँचेंगे तथा वापसी में 21 सितम्बर को 9105 हरिद्वार मेल द्वारा रात्रि 8.00 बजे अजमेर से रवाना होकर 22 सितम्बर को प्रातः 5.15 बजे पुरानी दिल्ली पहुँचेंगे।
2. पुष्कर तीर्थ को सभी तीर्थों का राजा कहा गया है। सत्संग के इस अवसर पर पुष्कर तीर्थ स्नान तथा विश्व में एकमेव ब्रह्मा मंदिर के दर्शन का सुयोग है। सभी सत्संगी बन्धु इस सुयोग का लाभ प्राप्त करें।
3. कृपया अपने साथ आवश्यकतानुसार ओढ़ने, बिछानें, माला, टोपी, टार्च तथा अपने सेंटर का बैनर अवश्य लायें।

अखिल भारतीय संतमत सत्संग, दिल्ली

आध्यात्मिक उत्सव

20 – 21 सितम्बर 2009

सत्संग स्थल

श्री पुष्कर गौतमाश्रम, छोटी बस्ती, पुष्कर, अजमेर (राजस्थान)

सम्पर्क सूत्र

श्री शिवराज शर्मा	मो. 9414284277	श्री श्रीकान्त गुप्ता	मो. 9413040386
श्री के.सी. मेघवंशी	मो. 9461068879	श्री सन्तोष तंवर	मो. 9461593122
श्री उमरावसिंह सांखला	मो. 9983322813	श्री अशोक पणिक्कर	मो. 9351262600

सत्संग का संक्षिप्त परिचय

परम सन्त महात्मा श्री यशपाल जी महाराज ने आनन्द योग के सिद्धान्तों का जनमानस में प्रचार व प्रसार करने के लिए अखिल भारतीय सन्तमत सत्संग की स्थापना की। इस संस्था का मुख्य उदेश्य है कि मनुष्य अपने जीवन में सारे कर्म, धर्म युक्ताहार–विहार की दृष्टि से पूरा करते हुए सत्पुरूष के ध्रुवपद पर पहुँच सके और ईश्वर साक्षात्कार प्राप्त कर सके।

आनन्द–योग, राज–योग का एक परिष्कृत प्रारूप है जिसमें राजयोग में आने वाली कठिनाइयों को दूर करके सहजतापूर्वक अध्यात्म के उच्चतम शिखर पर पहुँचाया जाता है। आनन्द योग का पवित्र ज्ञान वही प्राचीन ब्रह्म–ज्ञान है जिसे महर्षि अष्टावक्र जी ने अपने प्रिय शिष्य राजा जनक को प्रदान कर आत्म साक्षात्कार का दिग्दर्शन करवाया था। यह आध्यात्मिक विद्या केवल हिन्दुओं की ही धरोहर नहीं रही अपितु इसका प्रचार–प्रसार अन्य धर्मों में भी हुआ।

हजरत मौलाना फजल अहमद खाँ साहब कुद्दुसुरूह ने महात्मा रामचन्द्र जी महाराज को अपना उत्तराधिकारी चुनकर हिन्दुओं में पुनः इस विद्या का प्रचार किया। सन्त–सतुरूओं की एक गौरवशाली श्रृंखला ने आज तक ब्रह्मज्ञान की दिव्य ज्योति को प्रज्जवलित करके रखा है। इस श्रृंखला में परम सन्त महात्मा रामचन्द्र जी महाराज, परम सन्त रघुवर दयाल जी महाराज, परम सन्त बृजमोहन लाल जी महाराज, परम सन्त यशपाल जी महाराज एवं वर्तमान में परम सन्त श्रीमती रूपवती जी जैसे उच्चकोटि के सतुरू हुए। इन सन्तों ने गृहस्थ धर्म का शास्त्रानुसार पालन करते एवं स्वयं जीविकोपार्जन करते हुए अध्यात्म विद्या का प्रचार किया। इन सन्तों ने स्वयं को गुरू कहलाने से हमेशा परहेज किया और अपने सत्संग में प्रेम व सेवाभाव से परिपूर्ण पारिवारिक वातावरण विकसित किया और अपने शिष्यों में 'लालाजी', 'चाचाजी', 'दद्दा जी', 'भाई साहब जी', और 'माता जी', जैसे पारिवारिक सम्बोधनों से विख्यात हुए।

यह साधना पद्धति सभी धर्म, जाति एवं सम्प्रदाय के साधकों के लिए एक Universal Method है। आज की आधुनिक जीवन शैली में तनाव रहित जीवन बिताने के लिए गृहस्थ सन्तों की यह एक अद्भुत देन है। अध्यात्म की उच्चतम अवस्था को प्राप्त करने के लिए इस साधना पद्धति को पूरे भारतवर्ष एवं विदेशों में भी कुछ केन्द्रों पर अभ्यास करवाया जाता है। सत्संग की वर्तमान संरक्षिका परम सन्त रूपवती जी (परम पूजनीय माता जी) और सत्संग के भावी संरक्षक परम सन्त सुरेश जी (परम पूज्य भैय्या जी) सत्संग के मुख्यालय बी–20, सी.सी. कॉलोनी, दिल्ली–7 में मार्ग–दर्शन के लिए उपलब्ध रहते हैं।

सत्संग की सभी शाखाओं में हर रविवार व बृहस्पतिवार सत्संग का आयोजन किया जाता है जिसमें कि ध्यान–योग का अभ्यास करवाया जाता है। बताए गए तरीके से अभ्यास करने पर एवं सत्संग कार्यक्रमों में नियमित रूप से भाग लेने पर सच्चे साधक गुरू–कृपा से सुषुप्ति, उलट–धार, आध्यात्मिक चक्रों का जागरण, 24 घण्टे का ध्यान, सहज समाधि, आत्म–साक्षात्कार एवं जीवन–मुक्त–अवस्था की प्राप्ति जैसे दुर्लभ आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त कर कृतकृत्य हो जाते हैं।

ॐ

जय सतुरूदेव जय पदशरणम्

अखिल भारतीय सन्तमत सत्संग (पंजीकृत)

मुख्यालय – बी 20, सी.सी.कोलोनी, राणाप्रताप बाग के सामने, दिल्ली – 110007

आध्यात्मिक उत्सव

पूजनीय माताओं और बन्धुओं,

यह सूचित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि परमपिता परमात्मा की असीम दया, कृपा एवं अखिल भारतीय सन्तमत् सत्संग की संरक्षिका परम सन्त पूजनीया माताजी श्रीमती रूपवती देवी (धर्मपत्नी परम सन्त महात्मा श्री यशपाल जी महाराज) के आशीर्वाद एवं कृपापूर्ण अनुमति से देश के विभिन्न प्रदेशों में आध्यात्मिक उत्सवों का आयोजन किया जाता रहा है। इस श्रृंखला में दिनांक 20 सितम्बर से 21 सितम्बर 2009 तक आध्यात्मिक उत्सव का आयोजन निम्न कार्यक्रम के अनुसार तीर्थराज पुष्कर जिला अजमेर, (राजस्थान) में किया जा रहा है। इस सत्संग में परम सन्त श्री सुरेश भैया जी पधार रहे हैं।

सभी सत्संगी भाई–बहनों से प्रार्थना है कि इस सुअवसर पर पधार कर सतुरूओं के आत्मिक फैज का लाभ उठायें व अन्य सज्जन वृन्द, भक्तजन व अध्यात्म के मार्ग में चलने के उत्सुक देवियों व सज्जनों को भी इस उत्सव में सम्मिलित होने के लिए साथ लायें व आमंत्रित करें। यह सूचना समस्त सत्संगी भाईयों व बहनों को देने की कृपा करें।

सत्संग स्थल :

श्री पुष्कर गौतमाश्रम

छोटी बस्ती, पुष्कर, अजमेर (राजस्थान)

विनीत :

समस्त सत्संगी परिवार

अजमेर (राजस्थान)

(पुष्कर अजमेर से केवल 11 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। राजस्थान रोडवेज बस स्टैण्ड अजमेर से प्रातः से सायं तक हर 15 मिनट पर पुष्कर के लिए बस उपलब्ध है। अजमेर रेलवे स्टेशन से बस स्टैण्ड जाने के लिए रेलवे स्टेशन के सामने 6 सीटर ओटो 4 रूपये प्रति व्यक्ति की दर से हर समय उपलब्ध रहते हैं।)